कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली

(राष्ट्रीय वागवानी अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान)

उजवा, नई दिल्ली - 110 073

फोन नंबर: 9667971155, वेबसाइट: www.kvkdelhi.org

मौसम पूर्वानुमान (24 नवम्बर से 28 नवम्बर 2021)

क्रमांक: KVK/DEL/GKMS/1121/G **बुलेटिन संख्या:** 07 **दिनांक:** 23-11-2021

कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली में स्थित मध्यम कालिक मौसम पूर्वानुमान केंद्र को भारत मौसम विज्ञान विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली से प्राप्त जानकारी के अनुसार दक्षिणी-पश्चिमी दिल्ली जिला एव आस-पास के क्षेत्रो में निम्नानुसार मौसम रहने की सम्भावना है:-

दिनांक ⟶ / कारक ↓		24 नवम्बर (बुधवार)	25 नवम्बर (गुरुवार)	26 नवम्बर (शुक्रवार)	27 नवम्बर (शनिवार)	28 नवम्बर (रविवार)
तापमान (°सेल्सियस)	अधिकतम	26.5	25.9	25.8	25.8	24.8
	न्यूनतम	10.9	10.7	11.4	10.7	11.1
आर्द्रता (%)	अधिकतम	19	32	23	31	40
	न्यूनतम	10	11	16	12	20
हवा की गति (कि.मी./घंटा)		6.0	6.0	3.0	4.0	6.0
पवन की दिशा		उतर-पश्चिम	पश्चिम-उतरी पश्चिम	पूर्व-दक्षिण पूर्व	पूर्व-दक्षिण पूर्व	पूर्व-उतरी पूर्व
बादलों की स्थिति		शून्य	शून्य	आंशिक	शून्य	शून्य
वर्षा (मि.मी.)		0.0	0.0	0.0	0.0	0.0

लघु संदेश

- आने वाले 5 दिन क्षेत्र में मौसम साफ रहने की संभावना है साथ ही निरंतर तापमान में गिरावट देखी जायेगी, इसलिए मौसम को ध्यान में रखते हुए धान की कटाई करें और रबी फसलों की बुवाई में देरी नही करें।
- क्षेत्र में वायु प्रदुषण की समस्या को देखते हुए, किसान भाई धान की पराली को ना जलाऐ, साथ ही परली की समस्या के समाधान के लिए पूसा डीकम्पोजर घोल का छिडकाव करें।
- तापमान को ध्यान में रखते हुए किसान गेंहू की बुवाई में ओर अधिक देरी न करें।
- खेत की जुताई करने के तुरंत बाद पाटा अवश्य लगाएं ताकि मिट्टी में नमी बनी रहें।

सामान्य सलाह

कोविड़-19 के गंभीर फैलाव को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि कृषि कार्यों के दौरान भारत सरकार द्वारा समय-समय पर दिये गये दिशा निर्देशों जैसे- व्यक्तिगत स्वच्छता, मास्क का उपयोग, समय-समय पर साबुन से हाथ धोना तथा एक दूसरे से सामाजिक दूरी बनाये रखे आदि।

(क) फसल विशिष्ट सलाह

फसल	विवरण
धान	❖ जिन खेतो में धान की फसल पकने वाली है, वहां मौसम को ध्यान में रखते हुए कटाई की जानी चाहिए। ❖ धान की कटाई सुपर एस.एम.एस. लगे कंबाइन से करवाएं ताकि पराली का प्रबंधन नवीनतम मशीनों के द्वारा आसानी से किया जा सके। उसके बाद दानों को अच्छी प्रकार से धूप में सूखा लें। अनाज को भंडारण में रखने से पहले भंडार घर की अच्छी तरह सफाई करें। ❖ धान की कटाई के बाद पराली को जमीन में मिला दें तथा पूसा डी-कंपोजर कैप्सूल @ 4 कैप्सूल/हेक्टेयर का उपयोग अवश्य करें ताकि अवशेष खेत में जल्दी विघटित हो जाए जिससे मृदा में कार्बनिक पदार्थों की वृद्धि हो सके, साथ ही यह पलवार का भी काम करती है। जिससे मृदा से नमी का वाष्पोत्सर्जन कम होता है एवं नमी मृदा में संरक्षित रहती है। ❖ धान की पराली को न जलाने की सलाह दी जाती है क्योकि इससे वातावरण प्रदूषण के साथ-साथ उत्पन्न धुंध के कारण सूर्य की किरणे फसलों तक कम पहुचती है, जिससे फसलों में प्रकाश संश्लेषण और वाष्पोत्सर्जन की प्रकिया प्रभावित होती है जिसके परिणाम स्वरुप भोजन बनाने में कमी आती है एवं फसलों की उत्पादकता व गुणवत्ता प्रभावित होती है।
सरसों	❖ समय पर बोई गई सरसों की फ़सल में विरलीकरण तथा खरपतवार नियंत्रण का कार्य करें। ❖ सरसों की फसल में नाइट्रोजन प्रबंधन के लिए यूरिया के छिडकाव के समय नमी का अवश्य ध्यान रखे ।
गेंहू	❖ तापमान को ध्यान में रखते हुए किसान गेंहू की बुवाई में ओर अधिक देरी न करें। ❖ मौसम को ध्यान में रखते हुए गेंहू की बुवाई का उचित समय है। गेंहू की बुवाई करने वाले किसान खेत की तैयारी करे व उन्नत प्रमाणित बीजो के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली व आई. ए. आर. आई., पूसा, नई दिल्ली में संपर्क करें।

फसल	विवरण
	❖ उन्नत प्रजातियाँ- सिंचित परिस्थिति- (**एच. डी. 3226**), (एच. डी. 18), (एच. डी. 3086), (एच. डी. 2967)। ❖ बीज की मात्रा 100 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर। ❖ जिन खेतों में दीमक का प्रकोप हो तो क्लोरपाईरिफॉस (20 ईसी) @ 5 लीटर प्रति हैक्टर की दर से पलेवा के साथ दें। ❖ नत्रजन, फास्फोरस तथा पोटाश उर्वरकों की मात्रा 120, 50 व 40 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर होनी चाहिये।

(ख) बागवानी विशिष्ट सलाह

बागवानी	विवरण
आलू	❖ आलू के पौधों की ऊँचाई यदि 15-22 से.मी हो जाए तब उनमें मिट्टी चढ़ाने का कार्य जरूरी है अथवा बुवाई के 30-35 दिन बाद मिट्टी चढ़ाई का कार्य सम्पन्न करें।
प्याज	❖ तापमान को ध्यान में रखते हुए किसानो को सलाह है कि प्याज पौध तैयारी के लिए उपयुक्त समय है। ❖ बीज दर– 10 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर। बुवाई से पहले बीजों को केप्टान @ 2.5 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार अवश्य करें।
टमाटर, मिर्च, बैंगन व गोभी	❖ यह मौसम ब्रोकली, फूलगोभी तथा बन्दगोभी की पौधशाला तैयार करने के लिए उपयुक्त है। ❖ तैयार पौध के लिए किसान भाई के.वि.के., दिल्ली में संपर्क करे । ❖ जिन किसानों के पास टमाटर, हरी मिर्च, बैंगन व गोभी (ब्रोकली, फूलगोभी तथा बन्दगोभी) आदि की पौध को ऊथली क्यारियों या मेंड़ों पर रोपाई करें है। ❖ रोपाई हमेशा शाम के समय करें। ❖ इस मौसम में खरीफ सब्जियों (मिर्च, बैंगन) में यदि फल छेदक, शीर्ष छेदक एवं फूलगोभी व पत्तागोभी में डायमंड़ बेक मोथ की निगरानी के लिए फीरोमोन प्रपंच 12-15 प्रति हेक्टेयर की दर से लगाए तथा प्रकोप अधिक हो तो स्पेनोसेड़ दवाई @ 1.0 मि.ली. प्रति 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बागवानी	विवरण
बेलवाली सब्जियाँ	❖ बेलवाली सब्जियों (मुख्यत: खीरा वर्गीय) को मचान पर चढ़ाने की व्यवस्था करें।
जड़ वाली एवं पत्तेदार सब्जियाँ	❖ इस मौसम में किसान सरसों साग (पूसा साग-1), मूली (जापानी व्हाईट, हिल क्वीन, पूसा मृदुला, पूसा चेतकी, समर लोंग), पालक (आलग्रीन, पूसा भारती), शलगम (पूसा स्वेती या स्थानीय लाल किस्म), बथुआ (पूसा बथुआ-1), चौलाई (पूसा लाल चौलाई, पूसा किरण), मेथी (पूसा कसुरी), धनिया (पंत हरितमा) तथा गांठ गोभी (व्हाईट वियना,पर्पल वियना) के प्रमाणित बीजो की बुवाई भी ऊथली क्यारियों या 10-12 से.मी. ऊँची-उठी हुई मेंड़ो पर करें।
मशरूम	❖ जिन किसानो ने मशरूम कम्पोस्ट तैयार नही की है उनको सलाह है की कम्पोस्ट तैयार करें। ❖ आगामी मशरूम फसल के लिए स्पॉन बुकिंग के लिए के. वि. के. नई दिल्ली व एन.एच. आर.डी.अफ., जनकपुरी, नई दिल्ली में संपर्क करें।
❖ किसान गाजर की यूरोपियन किस्मों जैसे नेंटीस, पूसा यमदागिनी, मूली की यूरोपियन किस्मों जैसे हिल क्वीन, जापानी व्हाईट, पूसा हिमानी, चुंकदर की किस्म क्रिमसन ग्लोब तथा शलगम की पी. टी. डब्लू. जी. आदि की बुवाई इस समय कर सकते है। ❖ इस सप्ताह किसान सब्जियों की निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों को निकाले। 15 से 25 दिन की सब्जियों में नत्रजन की बची हुई मात्रा का छिड़काव करें।	

(ग) पशुपालन विशिष्ट सलाह

विवरण
❖ बदलते मौसम में पशुओं के शारीरिक तापमान में उतर-चढ़ाव को देखते हुए पशुओं की खास देखभाल करें । ❖ मौसम में फेरबदल के कारण पशुओं में बुखार, फेफड़ो में संक्रमण (Pneumonia), थनेला(Mastitis) व दस्त (DIARRHOEA) आदि रोग देखने को मिल रहे हैं, अतः पशुपालक भाई सावधानी बरतें जैसे पशुओं

विवरण

के नीचे सूखा रखें, नवजात बछड़ों/ बछड़ियों को ठंड से बचाएँ, उचित आहार प्रबंधन करें, सही समय पर टीकाकरण करवाएँ व समय-समय पर पशु विशेषज्ञ की सलाह ले ।

- जिन किसानो ने अपने पशुओं को खुरपका-मुंहपका, गलघोटू व लंगड़ा बुखार रोगों का टीकाकरण नही कराया है वो अपने नजदीकी पशु चिकित्सालय से तुरंत टीकाकरण करवाए।
- दुधारू पशुओं में होने वाले थनैला रोग की रोकथाम के लिए समय-समय पर पशुओं की निगरानी करते रहें व रोग के लक्षण दिखाई देने पर पशु विशेषज्ञ की सलाह ले ।

डॉ. पी. के. गुप्ता
प्रमुख, के.वि.के., दिल्ली